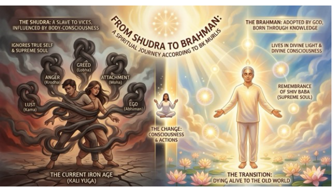

08-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अभी तुम शूद्र घराने से निकल ब्राह्मण घराने में आये हो, बाप ने ब्रह्मा मुख से तुम्हें एडाप्ट किया है - तो इसी खुशी में रहो"

बहुत ढूंढने के बाद मिले हो मेरे बाबा..
अब आप को जो पा लिया है तो हमें
और कुछ भी नहीं चाहिए मीठे बाबा...
जो भी पाना था वो सब कुछ पा लीया है
मेरे प्राण बाबा...

कापारी खुशी

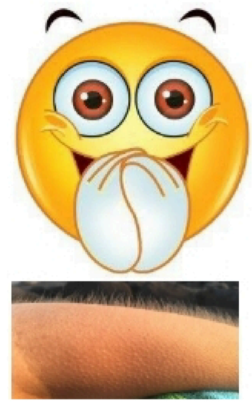

प्रश्नः कौन सा गुह्य राज़, ब्राह्मण कुल वाले बच्चे ही समझ सकते हैं?

उत्तर: निराकार शिवबाबा हमारा पिता है और यह ब्रह्मा हमारी माता है। निराकार भगवान कैसे मात-पिता, बन्धु-सखा बनते हैं, यह गुह्य गुप्त राज़ ब्राह्मण कुल के बच्चे ही समझ सकते हैं। उसमें भी जो दैवी कुल में ऊंच पद पाने वाले हैं वही यह राज़ यथार्थ रीति समझेंगे।

Point to be Noted

ओम् शान्ति। बच्चे बैठे हैं - समझ रहे हैं कि हमारा

बापदादा आया हुआ है। बाप तो इकट्ठा हो जाता है दादा के साथ, तो कहेंगे बापदादा आये हैं। वह टीचर भी है। बाप, दादा के बिगर तो कुछ बता न सके। बुद्धि चलनी चाहिए क्योंकि यह नई बात है ना। अज्ञान काल में याद करते हैं सिंगल को। कहेंगे हमारा गुरू फलानी जगह है। उनके शरीर का नाम जानते हैं। हमारा बाबा, हमारी माँ फलानी जगह है। उनका नाम रूप सब कुछ है। मनुष्यों ने फिर शार्ट में लिख दिया है। मनुष्यों ने जो बनाया है, उनमें कुछ न कुछ रांग है। भल गायन है त्वमेव माताश्च पिता... यह एक के लिए ही गाया जाता है। ब्रह्मा के लिए भी नहीं गाया जाता है। उनका नाम रूप बुद्धि में नहीं आता। न विष्णु का, न शंकर का। गाते तो हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे। तो भी बुद्धि ऊपर में जायेगी। श्रीकृष्ण को याद कोई कर न सके। याद फिर भी निराकार को ही करेंगे, उनकी महिमा है। तो बाप समझाते हैं - यहाँ जब बैठते हो तो लौकिक सम्बन्ध से बुद्धियोग निकाल, पारलौकिक बाप को याद करो। इस समय यह सम्मुख है। भक्ति मार्ग में जो गाते हैं तो आंखें

Point to be Noted

Shiv भगवान उवाच:

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

52. तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे। (गुरुग्रंथ साहब)
आप ही हमारे मात-पिता हो। हम आपकी सन्तान हैं। आपकी कृपा से हमें अपार सुख प्राप्त होता है। शिव बाबा अपने बच्चों को पढ़ाई पढ़ाते हैं यही उनकी कृपा है। ब्राह्मण बच्चों को ध्यान से पढ़ाई पढ़ना है और अपने आपको सौभाग्यशाली बनाना है।

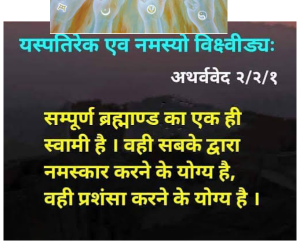

08-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ऊपर करके कहते हैं - तुम मात-पिता.... हे भगवान कह याद करते हैं। भगवान जब कहते हैं तो शिवलिंग को भी याद नहीं करते। तोते मिसल ऐसे ही गाते हैं। लक्ष्मी-नारायण के लिए भी ऐसे नहीं कह सकते, यह तो महाराजा-महारानी हैं। उनका बच्चा ही मात-पिता कहेंगे, बन्धु नहीं कहेंगे। भक्त लोग गाते हैं पतित-पावन, परन्तु यह बुद्धि में नहीं आता कि शिवलिंग होगा, ऐसे ही सिर्फ कह देते हैं - हे भगवान! हे भगवान किसने कहा, किसको कहा? कुछ भी पता नहीं। अगर यह ज्ञान होता मैं आत्मा हूँ, उनको बुलाता हूँ तो यह समझें कि वह निराकार परमात्मा है। उनका रूप ही लिंग है। यथार्थ रीति कोई बाप को याद नहीं करते। उनसे प्राप्ति क्या होगी, कब होगी - यह कुछ भी नहीं जानते। तुम भी नहीं जानते थे। अभी तो बाप के बने हो। तुम जानते हो हमको शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा अपना बच्चा बनाया है। यह ब्रह्मा माँ है। इस ब्रह्मा माता द्वारा शिवबाबा ने एडाप्ट किया है। इस समय तुम अच्छी रीति जानते हो। हम शिवबाबा के बच्चे हैं। साकार में फिर प्रजापिता ब्रह्मा के

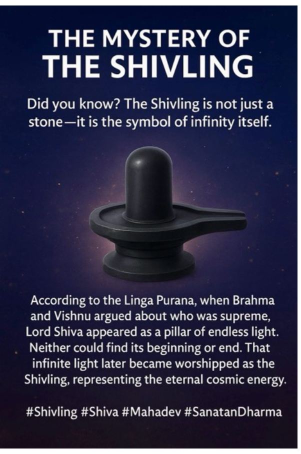

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

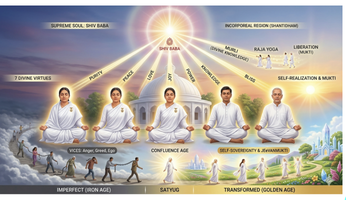

Mind very well...

It is Rejuvenation

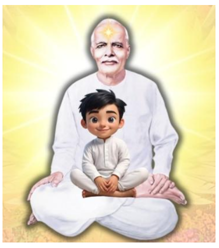

बच्चे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। ऐसे नहीं कि कोई नई सृष्टि रचते हैं? नहीं, इस समय आकर गोद में लेते हैं, एडाप्ट करते हैं। अब मात-पिता कहते हैं तो शिव पिता ठहरा और माता ब्रह्मा ठहरी। उनको कहा जाता है मात-पिता। बाप ब्रह्मा द्वारा कहते हैं तुम आत्मायें मेरे बच्चे हो। फिर आत्मा को बैठ पहचान देते हैं कि आत्मा क्या है? कहते भी हैं भ्रकुटी के बीच में रहती है, स्टार मिसल है और कुछ भी नहीं जानते। यह कह न सकें कि आत्मा 84 जन्म भोगती है। आत्मा शरीर द्वारा पार्ट बजाती है। भिन्न-भिन्न नाम, रूप, देश, काल से आत्मा एक शरीर छोड़ती है तो सारा परिवार ही बदल जाता है। कोई एडाप्ट करते हैं तो परिवार ही बदल जाता है। मात-पिता जिससे जन्म लिया, उनको भी जानते हैं। फिर जो एडाप्ट करते हैं उनके घर का बन जाते हैं। यहाँ तुम शूद्र घराने से निकल अब ब्राह्मण घराने में आये हो। ब्रह्मा तन से तुमको एडाप्ट किया। तुम तो ब्राह्मण कुल में आ गये। यह बातें शास्त्रों में नहीं लिखी जा सकती, यह समझाया जाता है। लिखने से कोई समझते नहीं।

Point to ponder deeply...

For more Related to Brahmababa Refer last Page

चढ़ाओ नशा...

कौन हो तुम...

You can never Reach to Shiv baba without Brahma Maa

ये पक्का समझ लो..

अभी तुम बच्चे ही जानते हो - हम परमपिता परमात्मा की सन्तान बने हैं। यह हो गई माँ। ब्रह्मा को प्रजापिता ही कहते हैं। इस द्वारा तुम बच्चों को एडाप्ट करता हूँ - यह कितनी गुप्त बातें हैं। सिवाए सम्मुख के कोई समझ न सकें। समझेंगे भी वह जो इस ब्राह्मण कुल के होंगे। दैवी कुल में ऊंच पद पाने वाले होंगे। नये किसकी बुद्धि में यह बातें बैठेंगी नहीं। न बुद्धि में बैठेगा, न किसको समझा सकेंगे। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं, जिनकी बुद्धि में बैठता है। गाया जाता है त्वमेव माताश्च पिता... याद किया जाता है शिवबाबा को। फिर कहते हैं तुम मात-पिता। एक बाप फिर मात-पिता कैसे? यह बातें और कोई समझा न सके। जैसे शास्त्रों में व्यास ने जो लिखा है वह मनुष्यों ने कण्ठ कर लिया है वैसे तुमको भी कहेंगे, तुमको कोई ने बताया है, तुमने कण्ठ कर दिया है। नये मनुष्य के लिए समझना बड़ा मुश्किल है। यहाँ

जरा सोचो तो सही...

How lucky and Great we are...!

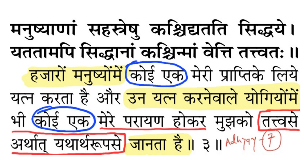
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है ॥ ३ ॥

वेदों के प्रणयनकर्ता - महर्षि वेद व्यास

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

रहने वाले भी कोई किसको इतना भी समझा नहीं सकते। तुम आत्मा हो - तुम्हारा बाप परमपिता परमात्मा है। वह बेहद का बाप ही बेहद का वर्सा देते हैं। वर्सा दिया था फिर पुनर्जन्म लेते-लेते 84 जन्म पूरे हुए, अब बाप फिर वर्सा देने आये हैं। यह किसको समझाना कितना सहज है। तुम मात-पिता किसको कहा जाता है - विचार की बात है ना। ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं फिर माँ भी जरूर चाहिए। तो जो अनन्य बच्ची होती है, ड्रामा प्लैन अनुसार उनको जगत-अम्बा का टाइटिल दिया जाता है। मेल को जगत-अम्बा नहीं कह सकते, इनको जगतपिता कहेंगे। इनका प्रजापिता नाम मशहूर है। अच्छा प्रजा माता कहाँ? तो एडाप्ट किया जाता है माता को। आदि देव तो है फिर आदि देवी को मुकरर किया जाता है। जगत-अम्बा तो एक ही है - उनकी ही महिमा है। जगत-अम्बा पर कितना मेला लगता है। परन्तु उनके आक्यूपेशन को कोई नहीं जानते। कलकत्ते में काली का मन्दिर है। बाम्बे में भी जगत अम्बा का मन्दिर है। शक्ल अलग-अलग है। जगत-अम्बा है

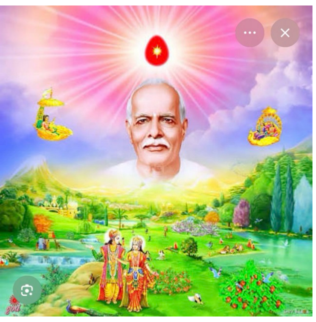

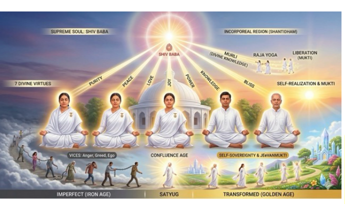

कौन? यह कोई नहीं जानते। उनको भी भगवती कहते हैं। अब जगत-अम्बा को भगवती नहीं कह सकते। वह तो ब्राह्मणी है, ज्ञान-ज्ञानेश्वरी है, उनको बाप से ज्ञान मिला है। तुम सब जगत-अम्बा के बच्चे हो। ज्ञान सुनकर फिर सुनाते हो। तुम्हारा धन्धा ही यह हुआ। तुमको ईश्वर पढ़ाते हैं, कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी तो मनुष्य है। मनुष्य कोई को भी पावन बना नहीं सकते। मनुष्यों की बुद्धि इतनी डल हो गई है जो कुछ भी समझते नहीं हैं। पतित-पावन तो एक ही बाप है। वह आते ही हैं, पतितों को पावन बनाने। यह सारी दुनिया तमोप्रधान है, सब पतित हैं। नई दुनिया पावन, पुरानी दुनिया पतित। पुरानी दुनिया में हैं नर्कवासी। नई दुनिया में हैं स्वर्गवासी। बुद्धि भी कहती है सतयुग में सिर्फ भारतवासी देवी-देवतायें होंगे और कोई नहीं थे। अभी तुम बच्चों को यह ज्ञान मिला है। नई दुनिया में पहले सूर्यवंशी देवता थे फिर चन्द्रवंशी हुए, तो सूर्यवंशी पास्ट हो गये। चन्द्रवंशी के बाद फिर वैश्य वंशी... आते हैं बरोबर लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अच्छा उनके आगे

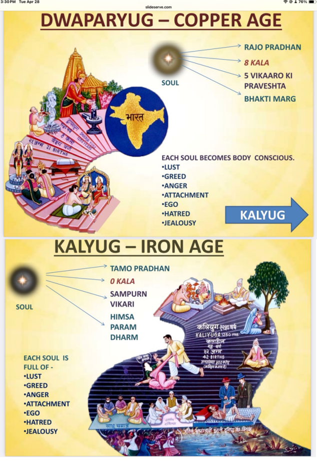

08-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

क्या था। यह कोई समझ न सकें। तुम बच्चों को बाप ने चक्र का राज़ समझाया है। द्वापर में हैं वैश्य वंशी। कलियुग में होते हैं शूद्र वंशी।

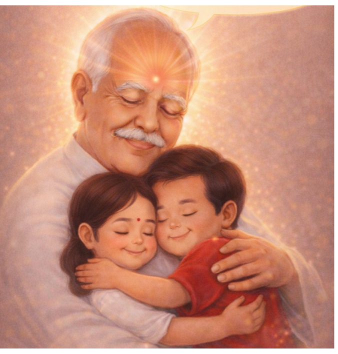

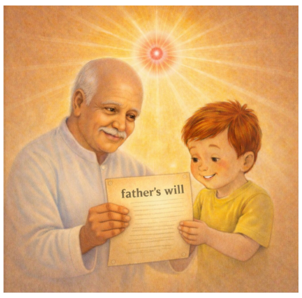

अभी तुम जानते हो - हम ब्राह्मण बने हैं। तुमको बाप ने अपना बनाया है अर्थात् शूद्र धर्म से देवता धर्म में ट्रांसफर किया है। अब सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी तो हैं नहीं। न लक्ष्मी-नारायण का राज्य है, न रामराज्य है। अब है कलियुग का अन्त। कलियुग के बाद जरूर सतयुग आयेगा। कलियुग में यह पुरानी, पतित दुनिया है, महान दु:खी हैं इसलिए देवताओं की जाकर महिमा गाते हैं, माथा टेकते हैं। अच्छा लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य किसने दिया? कोई है जो बता सके। कोई के भी ख्याल में नहीं होगा क्योंकि बुद्धि में है कलियुग अभी बच्चा है। 40 हजार वर्ष पड़े हैं इसलिए यह ख्याल आते ही नहीं। अभी तुमको यह ख्याल आता है। कई बच्चे कहते हैं हमें याद नहीं रहती। क्यों नहीं रहती?

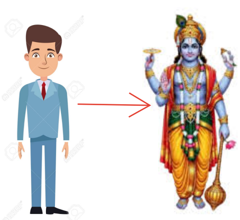

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Here is the Fault

कुमारका

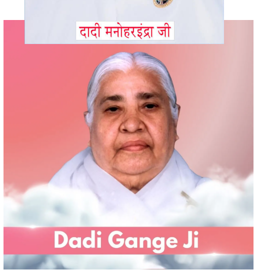

क्योंकि सवेरे-सवेरे उठकर याद में बैठकर धारणा नहीं करते। समझते भी हैं फिर किसको समझा नहीं सकते। यह तो जरूर होगा। सब एकरस तो समझदार बन न सकें। समझदार भी चाहिए, बेसमझ भी चाहिए। बहुत समझदार तो जाकर राजा-रानी बनेंगे। जितना-जितना जो जास्ती समझते और समझाते हैं उनका नाम बाला होता है। प्रदर्शनियाँ होती हैं तो लिखते हैं बाबा फलानी को भेज दो। तो क्या तुम नहीं समझा सकते हो? बाबा उनकी प्रैक्टिस जास्ती है। हम थोड़े कच्चे हैं। बाबा खुद भी कहते हैं - कहाँ से भी निमंत्रण मिलता है तो लिखकर भेजो, कौन-कौन हैं, तो हम देखेंगे किस-किसको भेजना चाहिए। संन्यासी भी उस निमन्त्रण पर हैं क्या? फिर बहुत अच्छी ब्रह्माकुमारी को भेजना होगा। अच्छा कुमारका है, मनोहर है, गंगे है - इसमें से किसी को भेज दो। बच्चे तो ढेर हैं। जगदीश को भेज दो, रमेश को भेज दो। तुम भी समझते हो, एक दो से होशियार हैं। जैसे जज मजिस्ट्रेट होते हैं। एक दो से होशियार होते हैं। गवर्मेन्ट जानती है, एक दो से

Points: ज्ञान

सेवा M.imp.

होशियार हैं। तब तो केस एक दो से ऊपर जाते हैं फिर हाईकोर्ट में जाओ फिर उनसे ऊपर। उसने भी जजमेन्ट ठीक न दी तो फिर उससे ऊपर जायेंगे। इनके ऊपर तुम रहम करो। अब यह सब बातें यहाँ होती हैं। सतयुग, त्रेता में होती नहीं। फिर द्वापर में राजा-रानी का राज्य होता है। वहाँ तो महाराजा-महारानी ही केस सम्भालते हैं। केस होंगे भी थोड़े।

अभी तो तमोप्रधान पतित हैं ना। तो बादशाह के पास केस जायेगा तो थोड़ी सज़ा दे देते हैं। कड़ी भूल होगी तो कड़ी सज़ा देंगे। यहाँ तो कितने जज वकील ढेर हैं। इतना कारोबार में फ़र्क है, सतयुग में क्या होता है, यह किसको पता नहीं।

अब बाप ने समझाया है - कोई से भी पूछो, इन लक्ष्मी-नारायण को जानते हो? जैसे बिरला है, बहुत मन्दिर बनाते रहते हैं तो कोई अच्छा बच्चा हो, उनको चिट्ठी लिखे। तुम लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर तो बहुत बनवाते हो। इन्हों को यह राजधानी कैसे मिली, जबकि सतयुग से पहले कलियुग था?

कलियुग में तो कुछ है नहीं। देवताओं ने तो कोई से लड़ाई की नहीं होगी। लड़ाई से कोई विश्व के

Multi Trillion dollar Question..

08-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मालिक बन नहीं सकते। विश्व के मालिक जो थे उन्हों के यह लक्ष्मी-नारायण के चित्र रखे हुए हैं। अभी तो है कलियुग। यहाँ लड़ाई चलती है हथियारों की। बाप ने समझाया है क्रिश्चियन धर्म वाले ही आपस में मिल जाएं, आपस में प्रीत रखें तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। परन्तु विश्व के मालिक तो लक्ष्मी-नारायण ही बनते हैं। बुद्धि कहती है यह आपस में मिल जाएं - तो मालिक बन सकते हैं परन्तु सतयुग में किंग-क्वीन तो कोई बन न सकें। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। अभी हम फिर से योगबल से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। तुम बता सकते हो - कल्प पहले भी संगम पर बाप से पद पाया है। 84 जन्म पूरे हुए फिर से वर्सा ले रहे हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वयं में धारणा करने और दूसरों को कराने के लिए - सवेरे-सवेरे उठकर बाप की याद में बैठना है। जो समझा है उसे दूसरों को समझाने की प्रैक्टिस करनी है।

2) लौकिक सम्बन्धों से बुद्धि योग निकाल एक पारलौकिक बाप को याद करना है। बाप से जो ज्ञान मिला है, वह सुनकर सबको सुनाना है। यही तुम्हारा धन्धा है।

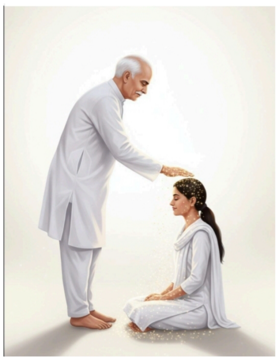

Method/Process/Instrument

08-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: समाने की शक्ति द्वारा एकमत का वातावरण बनाने वाले दृष्टान्त रूप भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

समझा?

जो एक जैसे मणके हैं, एक की ही लगन और एकरस स्थिति में स्थित, एक की मत पर चलने वाले हैं, आपस में संकल्पों में भी एकमत हैं, वही माला में पिरोये जाते हैं।

लेकिन एकमत का वातावरण तब बनेगा जब समाने की शक्ति होगी।

यदि कोई बात में भिन्नता हो जाती है तो उस भिन्नता को समाओ तब आपस में एकता से समीप आयेंगे और सबके आगे दृष्टान्त रूप बनेंगे।

स्लोगन: हर संकल्प, वाणी और कर्म में रूहानियत धारण करो तब सर्विस में रौनक आयेगी।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

कोई भी दर्दनाक सीन देखते हुए नथिंग न्यु,

जिन्हें यह नथिंग न्यू का पाठ पक्का है वह घबरा नहीं सकते।

क्या हुआ, कैसे हुआ, यह हुआ... समाचार सुनते, देखते भी ड्रामा की बनी हुई भावी को शक्तिशाली बन देखते और औरों को भी शक्ति देते चलो।

दुनिया वाले घबराते और आप एकरस स्थिति में रह उन आत्माओं में शक्ति भरते।

जो भी सम्पर्क में आये, उसे शक्तियों का, शान्ति का दान देते चलो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Method/Process/Instrument | Outcome/Output/Result

29-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- मनन द्वारा बाप की प्रापर्टी को अपनी प्रापर्टी बनाने वाले दिव्य बुद्धिवान भव

Finale Achievement

बाप द्वारा जो भी खजाना मिलता है, उसे मनन करो तो अन्दर समाता जायेगा।

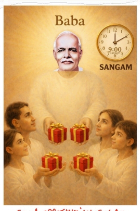

Equal opportunity for All

प्रापर्टी तो सबको एक जैसी मिली हुई है लेकिन जो मनन करके उसे अपना बनाते हैं, उन्हें उसका नशा और खुशी रहती है इसलिए कहा जाता है - अपनी घोट तो नशा चढ़े। m.m.m....imp.

Here is the Difference

Advantages

जो मनन की मस्ती में सदा मस्त रहते हैं उन्हें दुनिया की कोई भी चीज़, उलझन आकर्षित नहीं कर सकती। उन्हें दिव्य बुद्धि का वरदान स्वत: मिल जाता है।

इस वरदान के संदर्भ में....

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए की स्व-अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वाध्याय/Self Study से ही हम ज्ञान की गहराई में जा सकेंगे और आत्मा में जो विकार गहराई में घर कर चुके हैं उनको Analyze कर सकेंगे जिसके चलते उनको निकाल भी सकेंगे।

Team HLM ये विनम्रता से भार पूर्वक अरज करती है कि आप मुरली को पढ़कर सेल्फ स्टडी अवश्य कीजिये। (यह समय बीत गया तो फिर कभी वापिस नहीं आएगा क्योंकि यह चक्र कल्प कल्पान्तर हूबहू रिपीट होता है)

तभी आप मुरली को गहराई से समझ पाएंगे और मुरली को समझना अर्थात मीठे बाबा को समझना क्योंकि मुरली है शिवबाबा का मन...

बाबा कहते हैं कि तुम जितना मुझको जानते जाओगे उतना संपन्न बनते जाओगे और सब कुछ जान जाओगे।

अपनी घोट तो नशा चढ़े...

बाप दादा के अनमोल मधुर महावाक्य मनन शक्ति पर

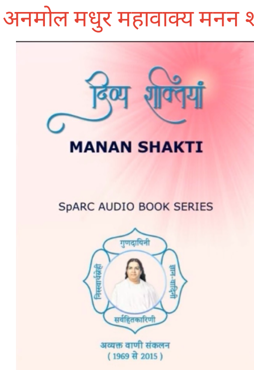

Click

मामेकम्/ Only Me

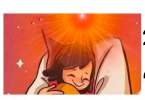

26-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - सुख देने वाले एक बाप को याद करो, इस थोड़े समय में योगबल जमा करो तो अन्त में बहुत काम आयेगा"

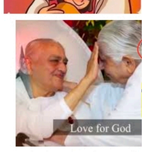

वक्त है कम लंबी मंजिल,
तुम्हें तेज कदम चलना होगा,
है परम तपस्या के पथीको,
तुम्हें कोई नूतन पथ रचना नहीं है,
सिर्फ मीठे ब्रह्मा बाबा ने जो किया है
वही फॉलो करना है, न ज्यादा, न कम..

Short Shortest Shortcut

Shortest route to Reach the destination of संपूर्णता।

That's All

Blindly copy

करना। इसमें डरने की बात नहीं। प्यार से समझाया जाता है। बाप को बताने में कल्याण है। बाप पुचकार दे प्यार से समझायेंगे। नहीं तो दिल से एकदम गिर पड़ते हैं। इनकी दिल से गिरा तो शिव-बाबा की दिल से भी गिरा। ऐसे नहीं कि हम डायरेक्ट ले सकते हैं, कुछ भी नहीं होगा। जितना समझाया जाता है - बाप को याद करो, उतना बुद्धि बाहर तरफ भागती रहती है। यह सब बातें बाप डायरेक्ट बैठ समझाते हैं, जिनके बाद में शास्त्र बनते हैं। इसमें गीता ही भारत का सर्वोत्तम शास्त्र है। गाया हुआ भी है सर्वशास्त्रमई शिरोमणी गीता, जो भगवान ने गाई। बाकी सब धर्म तो बाद

ये पक्का समझ लो.. | m.m.m....imp.

ये पक्का कर लो..

चाहिए। हम शिवबाबा से इनके द्वारा वर्सा लेते हैं। बाप बिगर दादे का वर्सा मिल नहीं सकता। जब कोई भी मिलता है तो यह बताओ कि बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। अच्छा!

ये पक्का समझ लो..

So, Don't become Heralgarh by Avoiding sweet Baba even in a thought

हैं - मेरे को याद करने से तुम सब कुछ जान जायेंगे। अच्छा।

01/04/2026

Note it down